

## डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

हाल ही में वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के तहत एक स्वायत्त संस्थान, अग्रकर अनुसंधान संस्थान (Agharkar Research Institute-ARI) के वैज्ञानिकों ने भारत के उत्तरी पश्चिमी घाटों में डक्लिप्टेरा की एक नई प्रजाति की खोज की है, जिसका नाम डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा (Dicliptera Polymorpha) है।

### प्रजातियों से संबंधित प्रमुख नष्कर्ष क्या हैं?

#### ■ डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा के अद्वितीय लक्षण:

- अग्निप्रतिरोधक क्षमता: यह ग्रीष्मकालीन सूखे से बच सकता है तथा घास के मैदानों में लगने वाली आग के प्रति भी अनुकूल हो सकता है।
- फरि से खलिते की प्रकृति: मानसून के बाद (नवंबर-अप्रैल) और फरि आग लगने के बाद मई-जून में खलिते है।
- रूपात्मक वशिष्टता: इसमें पुष्पों की ऐसी संरचनाएँ होती हैं जो भारतीय प्रजातियों में असामान्य हैं, लेकिन अफ्रीकी प्रजातियों में पाई जाने वाली संरचनाओं के समान होती हैं।
- कठोर परिस्थितियों के लिये अनुकूलन:
  - यह पश्चिमी घाट के खुले घास के मैदानों की ढलानों पर पनपता है।
  - काष्ठीय मूलवृत्त दूसरे पुष्पन चरण के दौरान बौने पुष्पीय अंकुर उत्पन्न करते हैं।

#### ■ प्रजातियों के लिये खतरा:

- मानव-प्रेरित आग: हालाँकि आग से इस प्रजाति को फरि से पनपने में मदद मिल सकती है, लेकिन बहुत अधिक या खराब तरीके से नियंत्रित आग से इसके आवास को नुकसान पहुँच सकता है।
- आवास का अतिप्रयोग: अतिचारण और भूमि-उपयोग में परिवर्तन से चरागाह की जैव विविधता को खतरा है।

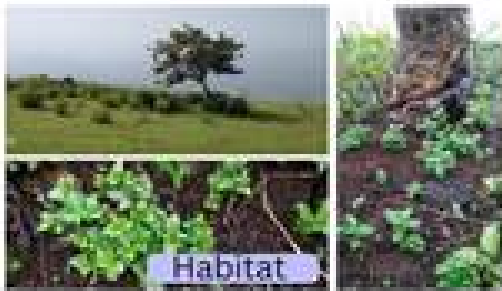
## Dicliptera polymorpha Dharap, Shigwan & Datar



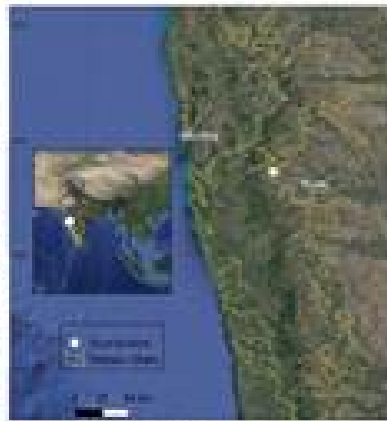
Monsoon flowering



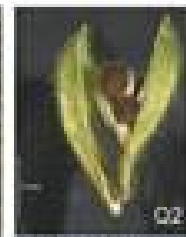
Summer flowering



Habitat



Distribution map



Capsule



## पश्चिमी घाट के बारे में कुछ प्रमुख तथ्य क्या हैं?

### परिचय:

- पश्चिमी घाट, जिसे सह्याद्री पहाड़ियों के रूप में भी जाना जाता है, वनस्पतियों और जीवों के अपने समृद्ध और अद्वितीय संयोजन के लिये जाना जाता है।
- इस शृंखला को उत्तरी महाराष्ट्र में सह्याद्री, कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरी पहाड़ियाँ तथा केरल में अन्नामलाई पहाड़ियाँ और कार्डमम पहाड़ियाँ कहा जाता है।
- इसे यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- पश्चिमी घाट में भारत के दो बायोस्फीयर रिज़र्व, 13 राष्ट्रीय उद्यान, कई वन्यजीव अभयारण्य और कई रिज़र्व वन पाए जाते हैं।
  - इसमें नागरहोल के सदाबहार वन, कर्नाटक में बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान और नुगु के परणपाती वन तथा केरल व तमिलनाडु राज्यों में वायनाड और मुदुमलाई राष्ट्रीय उद्यान के आसपास के क्षेत्र शामिल थे।

### वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट:

- भारत के चार मान्यता प्राप्त जैव विविधता हॉटस्पॉट में से एक, यह कई स्थानिक और अभी तक खोजी जाने वाली प्रजातियों का आवास है।

### चरागाह पारस्थितिकी तंत्र:

- घास के मैदानों में अद्वितीय वनस्पतियाँ और जीव पाए जाते हैं, जिनमें से कई अग्निके अनुकूल होते हैं।
- दुर्लभ एवं संकटग्रस्त प्रजातियों के लिये आवास, पारस्थितिकी संतुलन के लिये आवश्यक।

## पश्चिमी घाट के संरक्षण के प्रयास:

### गाडगलि समिति (2011):

- इसे पश्चिमी घाट पारस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल (Western Ghats Ecology Expert Panel- WGEEP) के नाम से भी जाना



प्रश्न: हाल ही में हमारे वैज्ञानिकों ने केले के पौधे की एक नई और भिन्न जात की खोज की है जिसकी ऊँचाई लगभग 11 मीटर तक जाती है और उसके फल का गूदा नारंगी रंग का है। यह भारत के किस भाग में खोजी गई है? (2016)

- (a) अंडमान द्वीप समूह
- (b) अन्नामलाई वन
- (c) मैकल पहाड़ियाँ
- (d) पूर्वोत्तर उष्णकटिबंधीय वर्षावन

उत्तर: (a)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/dicliptera-polymorpha>

